Seventeenth Loksabha

>

Title: Need to declare 'Margashirsha Shukla Ekadasi' as 'Antarrashtriya Geeta Diwas' -laid.

श्रीमती केशरी देवी पटेल (फूलपुर): हमारा देश भारत एक धर्म परायण देश है । इस देश की धरती पर लगभग 5200 वर्ष पूर्व अवतरित श्रीमद्भगवद् गीता 700 श्लोकों का एक दिव्य ग्रंथ है । यह एक अमूल्य चिंतामणि रज, साहित्य सागर में अमृत कुंभ और विचारों के उद्यान में कल्पतरू तथा धर्म में सत्यपथ का एक ज्योति स्तंभ है । इसमें वेद का मर्म, उपनिषद का सार, महाभारत जैसा ऐतिहासिक ग्रंथ का नवनीत तथा सांख्य का समन्वय है । यह एक ऐसा आध्यात्मिक शास्त्र है जिसमें मनुष्य नर से नारायण बन सकता है । यह अलौकिक गंथ एक ऐसा तत्वज्ञान है जिसमें भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व की आत्मा बसती है और आज तक निर्विवादित रहा है ।

लगभग सभी सम्प्रदायों के संस्थापक महापुरुषों ने अपनी क्षेत्रीय भाषा में गीता का ही सत्य दुहराया है कि “ईश्वर एक है ।

पूरे विश्व में समस्या बनी है । रक्तरंजित वातावरण, आतंकवाद, नस्लभेद, ऊँच-नीच तथा अनेकानेक मुद्दों से विश्व के हर राष्ट्र का नेतृत्व समाधान खोजने के लिए प्रयास कर रहा है लेकिन इन सबका संपूर्ण समाधान केवल श्रीमद भगवद् गीता भाष्य यथार्थ गीता में ही भली प्रकार है ।

इस संदर्भ में मेरी एक प्रार्थना तथा बहुमूल्य सुझाव है । हमारे पंचांग के अनुसार "गीता जयंती दिवस" मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी पर मनायी जाती है । हमारी मान्यता के अनुसार यह दिवस श्रीमद्भगवद् गीता का प्रतीकात्मक जन्म दिवस है । इसी दिन महाभारत युद्ध से पहले अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था । अतः विश्व में इस महान ग्रंथ को यथोचित सम्मानित करने के लिए इस दिवस को "अंतर्राष्ट्रीय गीता दिवस" घोषित कराने का प्रयास किया जाय ताकि विश्व जनमानस का ध्यान इसके उपदेशों पर केन्द्रित हो सके ।